

॥ कामाक्षि स्तुतिः ॥

॥ कामाक्षी स्तुतिः ॥

॥ श्री ॥

॥ ॐ ॥

पादाग्र-लम्बि-परमाभरणाभिरामे

मञ्जीर-रत्न-रुचि-मञ्जुल-पाद-पद्मे

पीताम्बर-स्पुरित-पेशल-हेम-काञ्ची

केयूर-कङ्कण-परिष्कृत-बाहु-वल्ली ॥१२४॥

पाता<sup>३</sup>क<sup>३</sup>र-लम्पि<sup>४</sup>-परमाप<sup>४</sup>रणापि<sup>४</sup>रामे

मञ्जूर-रत्न-रुचि-मञ्जु<sup>३</sup>ल-पत्<sup>३</sup>मे

पीताम्प<sup>३</sup>र-स्पर्<sup>२</sup>रिथ-पेशल-हेम-काञ्चि

केयूर-कङ्कण-परिष्कृत-पा<sup>३</sup>रु-वल्ली ॥१२४॥

पुण्ड्र-चाप-विलसन्-मृदु-वाम-पाणे

रत्नोर्मिका-सुम-शारान्वित-दक्ष-हस्ते

वक्षोज-मण्डल-विलासि-वलक्ष-हारि

पाशाङ्कुशाङ्गद-लसद्-भुज-शोभिताङ्गि ॥१२५॥

पुण्ड्र<sup>३</sup>रक्ष-साप-विलसन्-मृदु<sup>३</sup>-वाम-पाणे

रत्नोर्मिका-सुम-शारान्वित-दक्ष-हस्ते

वक्षोज<sup>३</sup>-मण्डल<sup>३</sup>-विलासि-वलक्ष-हारि

पाशाङ्कुशाङ्गद<sup>३</sup>-लसद्<sup>३</sup>-भुज<sup>३</sup>-शोभिताङ्गि<sup>३</sup> ॥१२५॥

वक्त-श्रिया-विजित-शारद-चन्द्र-बिम्बे  
ताडङ्क-रत्न-कर-मण्डित-गण्ड-भागो।  
वामे-करे-सरसिजं-सुबिसं-दधाने  
कारुण्य-निर्जरदपाङ्ग-युते महेशि ॥१२६॥

வக்த்ர-ஸ்ரீயா-விஜி<sup>3</sup>த-ஸாரத<sup>3</sup>-சந்த்<sup>3</sup>ர-பி<sup>3</sup>ம்பே<sup>3</sup>  
தாட<sup>3</sup>ங்க-ரத்ன-கர-மண்டி<sup>3</sup>த-க<sup>3</sup>ண்ட-பா<sup>4</sup>கே<sup>3</sup>  
வாமே-கரே-சரசிஜம்-ஸுபி<sup>3</sup>ஸம்-த<sup>3</sup>தா<sup>4</sup>னே  
காருண்ய-நிர்ஜ<sup>3</sup>ரத<sup>3</sup>பாங்க<sup>3</sup>-யுதே-மஹேஸி ॥126॥

माणिक्य-सूत्र-मणि-भासुर-कम्बु-कण्ठी  
भाल-स्थ-चन्द्र-शकलोज्ज्वलितालकाढये ।  
मन्द-स्मित-स्फुरण-शालिनि-मञ्जु-नासे  
नेत्र-श्रिया-विजत-नील-सरोज-पत्रे ॥१२७॥

மாணிக்ய-ஸுத்ர-மணி-பா<sup>4</sup>சுர-கம்பு<sup>3</sup>-கண்டி<sup>2</sup>  
பா<sup>4</sup>ல-ஸ்த<sup>2</sup>-சந்த்<sup>3</sup>ர-ஸகலோஜ்வலிதாலகாட்<sup>4</sup>யே  
மந்த<sup>3</sup>-ஸ்மித-ஸ்பு<sup>2</sup>ரண-ஸாலினி-மஞ்சு<sup>3</sup>-நாஸே  
நேத்ர-ஸ்ரீயா-விஜ<sup>3</sup>த-நீல-சரோஜ<sup>3</sup>-பத்ரே ॥127॥

सुभ्रूलते-सुवदने सुललाट-चित्रे  
योगीन्द्र-मानस-सरोज-निवास-हंसि।  
रत्नानुबद्ध-तपनीय-महा-किरीटे  
सर्वाङ्ग-सुन्दरि-समस्त-सुरेन्द्र-वन्द्ये ॥१२८॥

ஸுப்<sup>4</sup>நுலதே-சுவத<sup>3</sup>னே-சுலலாட-சுத்ரே  
யோகீ<sup>3</sup>ந்த்<sup>3</sup>ர-மானஸ-சரோஜ<sup>3</sup>-நிவாஸ-ஹம்ஸி  
ரத்னானுப<sup>3</sup>த்<sup>4</sup>த<sup>3</sup>-தபனீய-மஹா-கிரீடே  
சர்வாங்க<sup>4</sup> சந்த்ரீ ஸமஸ்த சுரேந்த்<sup>3</sup>ர-வந்த்<sup>3</sup>யே ॥128॥

काङ्क्षानुरूप-वरदे-करुणाद्र-चित्ते

साम्राज्य-संपदभिमानिनि-चक्र-नाथे।

इन्द्रादि-देव-परिसेवित-पाद-पद्मे

सिंहासनेश्वरि-परे-मयि-सन्निदध्याः ॥१२९॥

काङ्क्षानुरूप-वरதே<sup>3</sup>-கருணாத்<sup>3</sup>ர-சித்தே

சாம்ராஜ்<sup>3</sup>ய-ஸம்பத<sup>3</sup>பி<sup>4</sup>மானினி-சக்ர-நாதே<sup>2</sup>

இந்த்<sup>3</sup>ராதி<sup>3</sup>-தே<sup>3</sup>வ-பரிஸேவித-பாத<sup>3</sup>-பத்<sup>3</sup>மே

ஸிம்ஹாஸனேஸ்வரி-பரே-மயி-ஸந்நித<sup>3</sup>த்<sup>4</sup>யா: ॥129॥

॥ इति ब्रह्माण्डमहापराणे-उत्तरभागे-चत्वारिंशे अध्याये दशरथमहाराजकृता कामाक्षि स्तुतिः ॥

॥त्रयोदशाक्षरि-महामंत्रः ॥

॥ श्रीराम जय राम जय जय राम ॥

॥ इति पं<sup>3</sup>रह्ममाण्ड<sup>3</sup>महोपासना-उत्तरभागे-चत्वारिंशे अध्याये दशरथमहाराजकृता कामाक्षि स्तुतिः ॥

॥ त्रयोदशाक्षरि-महामन्त्रः ॥

॥ श्रीराम जय राम जय जय राम ॥